प्रार्थना

वह शक्ति हमें दो दयानिधे,
कर्त्तव्य मार्ग पर डट जावें !
पर-सेवा पर-उपकार में हम,
निज-जीवन सफल बना जावें !

हम दीन-दुखी निबलों-विकलों
के सेवक बन संताप हरें !
जो हैं अटके, भूले-भटके,
उनको तारें खुद तर जावें !

छल, दंभ-द्वेष, पाखंड-झूठ,
अन्याय से निशिदिन दूर रहें !
जीवन हो शुद्ध सरल अपना,
शुचि प्रेम-सुधा रस बरसावें !

निज आन-मान, मर्यादा का
प्रभु ध्यान रहे अभिमान रहे !
जिस देश-जाति में जन्म लिया,
बलिदान उसी पर हो जावें !